प्रधानमंत्री का श्रीहरिकोटा में वैज्ञानिकों को संबोधन

21 सितंबर, 2005
श्रीहरिकोटा

मुझे खुशी है कि आज मैं यहां श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में आपके बीच उपस्थित हूं। यह एक विशेष स्थान है क्योंकि यह भारत के उन सर्वाधिक कुशल वैज्ञानिकों की कई पीढ़ियों के प्रयासों की याद दिलाता है जिनके कारण भारत विश्वस्तरीय अंतरिक्ष पोर्ट का निर्माण करने में सफल हो सका। मुझे खासतौर से इस बात की भी खुशी है कि आज मुझे यहां पर प्रो0 सतीश धवन जो कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के पथ-प्रदर्शक थे और जिनके नाम पर इस केंद्र का नामकरण किया गया है, की प्रतिमा का अनावरण करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

प्रोफेसर धवन एक उत्कृष्ट कोटि के वैज्ञानिक तथा स्मरणीय व्यक्ति थे। मुझे उनके साथ बिताया गया वह लंबा समय याद है जब मैं अंतरिक्ष आयोग का सदस्य था। मेरी नजर में वे अब तक के सर्वाधिक उत्कृष्ट व्यक्तियों में से एक रहे हैं- प्रतिभाशाली एयरोनॉटिकल इंजीनियर, उत्कृष्ट अंतरिक्ष विज्ञानी, एक दार्शनिक, देशभक्त और सबसे बढ़कर बात एक महान मानवतावादी और अपने साथियों के एक महान अगुवा वैज्ञानिक। उन्होंने अपने सुंदर व्यक्तित्व को सामाजिक और नैतिक मूल्यों तथा प्रबंधन में असाधारण वस्तु-निष्ठता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ जोड़ दिया। उन्होंने छात्रों, वैज्ञानिकों तथा प्रशासकों की कई पीढ़ियों को निरंतर प्रयास करते रहने तथा कभी हार न मानने के लिए प्रेरित किया। पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए प्रोफेसर धवन की चिंता तथा सभी प्राणियों के प्रति उनकी गहन रूचि सहज ही आकर्षित कर लेती थी। इसलिए मैं इसे अपना बड़ा सौभाग्य समझता हूं कि मुझे प्रो0 सतीश धवन को निकट से जानने और उनके साथ काम करने का मौका मिला।

आज यहां मैं प्रो0 धवन के दूरदर्शी एवं कल्पनाशील नेतृत्व के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिसने इस अलग-थलग पड़े द्वीप को भारत का गौरवशाली अंतरिक्ष पोर्ट बनाने में मदद की। अंतरिक्ष की ओर खुलने वाले भारत के इस झरोखे से पृथ्वी की कक्षा में अंतरिक्ष यान छोड़े जाने की क्षमता मौजूद है और यहीं से हम जल्दी ही चांद की ओर कूच करेंगे। आशा है कि यह प्रयास अन्य ग्रहों की खोज की दिशा में उठा हुआ पहला कदम होगा।

इसरो परिवार और हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम के साथ मेरा जुड़ाव आज मुझे विशेष गर्व की अनुभूति करा रहा है। पिछले तीन दशकों में हल्की-फुल्की आवाज करने वाले रॉकेटों, जैसा कि एक मैंने आज यहां से प्रक्षेपित होते हुए देखा, से शुरू होकर **इसरो** ने अपने विकासक्रम में काफी बड़ी छलांग लगाई है। अब आपने शक्तिशाली एवं जटिल रॉकेट प्रणालियों के डिजाइन, विकास तथा प्रक्षेपण में महारथ हासिल कर ली है। अब आपकी क्षमताओं में ध्रुवीय उपग्रह प्रेक्षपण यान तथा पृथ्वी की कक्षा में घूमने वाले उपग्रह प्रक्षेपण यान शामिल है। आपने यह साबित कर दिया है कि आप दुनिया में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों के समकक्ष हैं और जटिल प्रौद्योगिकियों के विकास तथा हमारे विकास संबंधी लक्ष्यों को पूरा करने हेतु उनके इस्तेमाल में किसी से पीछे नहीं हैं। आपने अत्यंत सफलता के साथ ये उपलब्धियां हासिल की हैं। मुझे बताया गया है कि इस केंद्र से छोड़े गए 11 बड़े प्रक्षेपण यान अत्यन्त सफल रहे हैं।

अतः यह बड़े गर्व की बात है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी प्रतिबंध आपके प्रयासों को बाधित नहीं कर पाए हैं-दरअसल उसकी वजह से आपने तेज कदमों से सफलता रूपी ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। मुझे यह देखकर बड़ा गर्व महसूस हुआ है कि **इसरो** द्वारा हाल ही में छोड़े गए 16 उपग्रहों में से 4 दूसरे देशों के हैं। हमने दुनिया के समक्ष यह साबित कर दिया है कि भारत उन्नत प्रौद्योगिकियों के मामले में अग्रणी है। आपकी उपलब्धियों में प्रतिभा, कौशल तथा भारत की नितांत बौद्धिक शक्ति का योगदान रहा है और आप गलत तथा घिसे-पिटे प्रतिबंधों से विचलित नहीं हुए। जहां तक परमाणु अप्रसार का संबंध है, **इसरो** ने बेदाग रिकार्ड कायम रखते हुए संवेदनशील और उन्नत प्रौद्योगिकियों की एक श्रृंखला खुद ही विकसित की है। इसके लिए **इसरो** भारत में तथा दुनियाभर में प्रशंसा का पात्र है।

अब से कुछ देर पहले मैंने परिसर और इसमें स्थापित सुविधाओं का जायजा लिया। यहां के कौशल स्तर को देखकर मैं काफी प्रभावित हुआ। मैंने यहां कुछ हार्डवेयर भी देखे जो हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की उपलब्धि और आपकी प्रतिभा, संकल्प-शक्ति तथा समर्पण भावना का सबूत है। हमारा देश आपके योगदान को नमन करता है। इस प्रक्षेपण केंद्र का काफी महत्व है। एक छोटी सी शुरूआत से आरंभ करके यह केंद्र दुनिया के बड़े अत्याधुनिक उपग्रह प्रक्षेपण केंद्रों में से एक बनकर उभरा है। यहां का उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा हमारी राष्ट्रीय जरूरतों को पूरा करता है और हमें अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के साथ मिलकर काम करने के लिए पर्याप्त सुविधाएं भी उपलब्ध कराता है।

मुझे इस बात का भी गर्व है कि भारत ने सिविलियन सेक्टर में रिमोट सेंसिंग उपग्रहों का एक विशालतम तारामंडल स्थापित कर लिया है। ये उपग्रह न केवल भारत को बल्कि दुनियाभर के एक दर्जन से भी अधिक देशों को प्राकृतिक संसाधनों के संबंध में अमूल्य आंकड़े उपलब्ध कराते हैं। हमारे पास एशिया-प्रशांत क्षेत्र की एक सबसे बड़ी घरेलू संचार उपग्रह प्रणाली भी मौजूद है। हम बहुत से राष्ट्रीय विकास कार्यों से सम्बंधित जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी अंतरिक्ष परिसंपत्तियों और अत्यन्त उन्नत प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करते हैं। इनमें दूरस्थ-शिक्षा तथा दूरस्थ-स्वास्थ्य, मौसम-विज्ञान, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं आपदा चेतावनी जैसे सामाजिक रूप से लाभदायक कई प्रयोजन शामिल हैं। ग्रामीण संसाधन केंद्रों की अभिनव योजना जैसे कई अन्य कार्यक्रमों को साथ मिलाकर हम भूमि के इस्तेमाल, जल संसाधनों के प्रबंधन, कृषि एवं मौसम पूर्वानुमान संबंधी आंकड़े उपलब्ध कराकर भारतीय किसानों की मदद कर सकते हैं। ये सभी हमारे देश में आम आदमी के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल में नई सोच के उदाहरण हैं। यह प्रो0 धवन की कल्पना थी और मुझे बहुत खुशी है कि हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रमों के जरिए उनकी यह कल्पना प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित की जा रही है।

राष्ट्रों और अर्थव्यवस्थाओं का भावी विकास न केवल प्रौद्योगिकी हासिल करने बल्कि लोगों की विकास संबंधी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में उनके प्रभावी इस्तेमाल से भी तय की जाएंगी। अतः यदि हमें जमीन पर अपने महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने में सफलता हासिल करनी है तो हमें निरंतर अपनी नजर तारों पर रखनी होगी। ऐसा ही एक भव्य कार्यक्रम हमारा चंद्र मिशनः चन्द्रयान-1 है।

हमें इस केंद्र से हमारे ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान की सहायता से इस मानवरहित मून-शॉट के सफलतापूर्वक प्रक्षेपण की प्रतीक्षा है। चंद्रयान-1 से हमारा वैज्ञानिक समुदाय अंतरिक्ष में अपनी और भी महत्वाकांक्षी योजनाओं के संबंध में अन्वेषण कार्य आंरभ कर सकेगा। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन से अंतर्राष्ट्रीय जगत में हमारे अंतरिक्ष समुदाय की साख और भी बढ़ जाएगी। न केवल चंद्रयान बल्कि हमारे अन्य कार्यक्रमों को भी अब हमारे अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों से सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। इसलिए मैं मानवता के लाभ के लिए अंतरिक्ष में वैज्ञानिक अन्वेषण हेतु अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति भारत की वचनबद्धता को दोहराता हूँ।

अंतरिक्ष अनुसंधान तथा राष्ट्रीय विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में आत्मनिर्भरता हासिल करना भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्रेरक बल है। तिरूवनंतपुरम में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र एवं द्रव्य प्रणोदन प्रणाली केंद्र, बंगलौर में **इसरो** उपग्रह केंद्र तथा अहमदाबाद में अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र इस राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने के काम में निरंतर लगे हुए हैं। इन्हें अंतर्राष्ट्रीय जगत में अत्यन्त उत्कृष्ट केंद्रों के रूप में जाना जाता है जो कि सच भी है।

इस समय यह केंद्र भावी चुनौतियों का सामना करने की एक महत्वाकांक्षी योजना पर काम कर रहा है। अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यान जी.एस.एल.वी.- एमके-III की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक विश्वस्तरीय प्रणोदक संयंत्र की स्थापना की जाएगी। नई पीढ़ी के उपग्रहों के परीक्षण और उन्हें जोड़ने के लिए कई अन्य उपग्रह भी निर्माण के दौर से गुजर रहे हैं।

ज्यों-ज्यों हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ता जाएगा त्यों-त्यों **इसरो** पर पूर्णतः सिविलियन प्रयोजनों के लिए अंतरिक्ष में प्रक्षेपण की हमारी बढ़ती जरूरतों को पूरा करने का भार बढ़ता जाएगा। हमारे राष्ट्रीय प्रयास के प्रमुख क्षेत्र हैं-हमारी अंतरिक्ष परिसंपत्तियों के अधिकतम उपयोग पर निर्भरता। इसलिए आपका प्रयास होना चाहिए अभिनव अंतरिक्ष परिवहन प्रणालियों के जरिए कम लागत पर अंतरिक्ष में पहुंचना। साथ ही ये सेवाएं प्रदान करते हुए आपको उत्कृष्टता और गुणवत्ता से समझौता नहीं करना होगा। आपको नवीनतम प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल करते हुए चलना है और इस क्षेत्र में अपनी अग्रता बनाए रखनी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप भारत को विश्व अंतरिक्ष के क्षेत्र में अग्रणी बना देंगे।

आज जब हम अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभ ले रहे हैं और उच्च लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रयासरत हैं तो ऐसे में हमें उन पथ-प्रदर्शकों के प्रति भी आभार व्यक्त करना होगा जिन्होंने हमें आगे का मार्ग दिखाया।

प्रो0 सतीश धवन हमारे लिए एक स्मरणीय व्यक्तित्व हैं जिनकी पुण्य-आत्मा आपको प्रेरित करने के लिए इस द्वीप में हमेशा मौजूद रहती है और हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रमों के संस्थापक डॉ0 विक्रम साराभाई की कल्पना और दूरदर्शिता भी बड़ी प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है।

हमें अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की अन्य असाधारण प्रतिभाओं जैसे राष्ट्रपति श्री कलाम, प्रोफेसर यू0आर0 राव, प्रोफेसर एम0जी0के0 मेनन, प्रोफेसर पंत, प्रोफेसर नरसिंहन, प्रोफेसर कस्तूरीरंगन तथा बहुत सी अन्य प्रतिभाओं को भी याद रखना चाहिए। इन असाधारण प्रतिभाओं के निर्देशन में **इसरो** के प्रतिबद्ध प्रयासों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा उसके विविध अनुप्रयोगों के मामले में भारत को क्षितिज पर चमकता हुआ एक सितारा बना दिया है। मुझे इस बात की खुशी है कि उनमें से कुछ विभूतियां आज यहां उपस्थित हैं। मैं अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं के विकास में अपना योगदान देने के लिए अपने राष्ट्र की ओर से उन्हें नमन करता हूं। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि आज हमारे बीच श्रीमती धवन अपने परिवार के साथ यहां उपस्थित हैं। महोदया, **इसरो** परिवार के सभी सदस्यों के साथ मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि एक महान वैज्ञानिक और महान मानवतावादी के रूप में प्रोफेसर सतीश धवन की सफलताओं के पीछे जो शक्ति थी, वह निश्चित रूप से आपकी ही शक्ति थी।

और अंत में, मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि आज भारतीय एस्ट्रानॉटिकल सोसायटी अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान के क्षेत्र में उच्च सफलता हासिल करने वाली हमारी उच्च प्रतिभाओं का सम्मान करने जा रही है। मैं आर्यभट्ट सम्मान पाने के लिए डॉ0 के0 कस्तूरीरंगन को बधाई देता हूं जिन्होंने उच्च कोटि की विशिष्टता के साथ **इसरो** का नेतृत्व किया। यह सम्मान उनके जीवनभर की उपलब्धियों के प्रति एक सच्चा सम्मान है। मैं उन युवा वैज्ञानिकों को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं जिन्होंने आज पुरस्कार प्राप्त किए हैं। आप एक अत्यन्त विशिष्ट समुदाय के अंग हैं- एक ऐसा समुदाय जिसके लिए उत्कृष्टता ही लक्ष्य है और जो उत्कृष्टता के लिए समर्पित है जो बौद्धिक प्रयास की भावना से प्रेरित हैं। ईश्वर करे कि आपकी इन भावनाओं और उपलब्धियों का यह सिलसिला अनवरत चलता रहे।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं सदैव **इसरो** परिवार के सभी सदस्यों के साथ हैं। ईश्वर आपका मार्ग प्रशस्त करे।